शुल्क १५ वर्ष
२१००/- रुपये

विज्ञप्ति

एक प्रति ८/- रुपये
वार्षिक २५०/- रुपये

तेरापंथ की केन्द्रीय गतिविधियों का सर्वाधिक लोकप्रिय साप्ताहिक मुखपत्र

विज्ञप्ति (साप्ताहिक) : वर्ष १९ : अंक ४ : नई दिल्ली : २८ अप्रेल से ४ मई २०१३

परम पावन आचार्यश्री महाश्रमण आदि श्रमण ३७ तथा महाश्रमणी साध्वीप्रमुखा कनकप्रभाजी आदि श्रमणी ४१, सर्व ७८ त्रिदिवसीय प्रवास हेतु रापर पधार गए हैं। २३ अप्रेल को यहां हर्षोल्लास के साथ महावीर जयंती का समायोजन हुआ। १० मई को पूज्यप्रवर वाव पधार जाएंगे। यहां १३ मई को अक्षय तृतीया का समायोजन होगा। १८ जून को जोधपुर पधार जाने की संभावना है।

परम श्रद्धेय आचार्यश्री महाश्रमण कच्छ (गुजरात) में

गांधीधाम में दीक्षा समारोह का आयोजन

१५ अप्रेल, चैत्र शुक्ला पंचमी। दीक्षा समारोह का शुभारंभ परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर के मंगल मंत्रोच्चार से हुआ। श्री बजरंग जैन ने आज्ञापत्र का वाचन किया, जिसे दीक्षार्थिनी के अग्रज दीपक, प्रकाश संघवी व परिजनों ने आचार्यवर को समर्पित किया। पूज्यप्रवर ने दीक्षार्थिनी के परिजनों से मौखिक आज्ञा प्राप्त की। लगभग १०.०८ बजे दीक्षार्थिनी मुमुक्षु नीता संघवी को आचार्यवर ने समणी दीक्षा प्रदान की। समणी नियोजिका ऋजुप्रज्ञाजी ने अहिंसा की प्रतीक प्रमार्जनी नवदीक्षित समणीजी को आर्षवाणी के उच्चारण के साथ प्रदान की। पूज्य आचार्यप्रवर ने नवदीक्षित समणी को नया नाम दिया--समणी निश्चयप्रज्ञा।

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने अपने दीक्षान्त भाषण में नवदीक्षित समणीजी को हर क्रिया में जागरूक रहने व संयम रखने की प्रेरणा प्रदान की। परिवार में संसारपक्षीय भाई मुनि अनंतकुमारजी व बहन समणी रुचिप्रज्ञाजी ने अपनी मंगलभावना व्यक्त की। संघवी परिवार की कुलदेवी बछेड़ीमाता मंदिर संस्थान के प्रमुख श्री प्रभुलाल संघवी ने अपने विचार व्यक्त किए। नवदीक्षित समणीजी की संसारपक्षीया अग्रजा साध्वी गौरवयशाजी के लिखित भावों का वाचन श्री चंदूभाई संघवी ने किया। श्री त्रिभुवन संघवी एवं श्रीमती रूपाली मालू ने अपने विचार रखे। स्थानीय महिला मंडल ने विशेष रूप से निर्मित एक आकर्षक घड़ी पूज्यप्रवर के समक्ष प्रस्तुत की। कन्यामंडल ने पंचाचार के अन्तर्गत स्वीकृत पांच संकल्पपत्र पूज्य चरणों में प्रस्तुत किए। कन्या भ्रूणहत्या निषेध के नियम भी कन्याओं ने स्वीकार किए।

मंत्री मुनिश्री ने अपने वक्तव्य में कहा--'जीवन में त्याग का महत्त्व है, भोग का नहीं। त्याग आत्मपुरुषार्थ से ही संभव हो सकता है। दीक्षित व्यक्ति अपनी साधना को तो प्रखर बनाए ही, इसके साथ उसके जीवन में अनुशासनबद्धता भी बनी व बढ़ती रहे। साधक समुचित साधना करता हुआ जीवन को कृतकृत्य बनाते हुए अपने गुरु के गौरव व संघ की महिमा को वृद्धिंगत करता है।'

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में कहा--'साधु का जीवन, उसका संयम पर्याय अमरोपम-देवलोक के समान सुखदायी होता है। जीवन को स्वर्गतुल्य बनाने की शर्त है साधु का मन साधुत्व में रम जाए। जिसका मन साधुत्व में नहीं रमता, उसका जीवन नरकसदृश बन जाता है। वह पग-पग पर विषादग्रस्त होता है। संसार में अनादिकालीन परिभ्रमण के बीच किसी-किसी को साधुत्व की प्राप्ति होती है। जीवन में दीक्षा का बड़ा महत्त्व है। किसी सौभाग्यशाली को ही संयमरत्न की प्राप्ति होती है। वे गुरु भी धन्य होते हैं, जो दूसरों को संयमरत्न प्रदान करते हैं। धर्मगुरु शरणदाता होते हैं। उनकी निश्रा में कितने जीव साधनारत रहते हैं। भौतिक सुख दीर्घकालिक नहीं, अल्पकालिक होते हैं, परम नहीं, अपरम होते हैं। हम शाश्वत सुख को देखें। साधु के जीवन में संयम की साधना अनवरत चलती रहे और परोपकार भी चलता रहे।'

आचार्यवर ने आगे कहा--'कच्छ में आचार्यों का आगमन बहुत कम हुआ है। कच्छ की कितनी साध्वियां, समणियां और संत अपनी सेवाएं दे रहे हैं। हमें बताया गया कि आज संपन्न हुई दीक्षा के साथ वर्तमान में कच्छ के इक्कीस साधु-साध्वियां व समणियां संघ में विद्यमान हैं। मुनि अनंतकुमारजी कच्छ से हैं। अपनी सेवा-साधना में रत हैं। इन्हें मंत्री मुनिश्री का सामीप्य प्राप्त है। कच्छ में वैरागी तैयार हों, यह प्रयास चलते रहना चाहिए। आहार, वस्त्र आदि की भिक्षा महत्त्वपूर्ण है, पर उससे भी मह वपूर्ण है गुरु को अपनी संतान की शिष्य रूप में भिक्षा देना। यह भिक्षा उससे संबंधित परिवार के लिए गौरव का विषय होती है।'

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने समणियों की विविध सेवाओं के संदर्भ में कहा--'समणियां अपेक्षानुसार साध्वियों की कितनी सेवा करती हैं। मैं इनकी सेवा को मूल्यांकित करता हूं। साध्वियां साध्वियों की और साधु साधुओं की सेवा करते हैं। हम साधु-साध्वियों को आवश्यकतानुसार कहीं भी सेवा में नियोजित करते हैं। वे अपनी सेवाएं देते हैं। अभी मुनि जंबूकुमारजी (मिंजूर) को सेवा में भेजा। साथ में मुनि यशवंतजी भी थे। डॉक्टरी इलाज के संदर्भ में मैं मुनि जंबूकुमारजी को एक्सपर्ट मानता हूं। सभी आत्मकल्याण की दिशा में आगे बढ़ें।'

कन्यामंडल द्वारा प्रस्तुत पंचाचार संकल्पों की आचार्यवर ने सराहना करते हुए कहा--'कन्यामंडल द्वारा स्वीकृत संकल्प का चिंतन अच्छा है। संन्यास पथ पर कौन आ सकती हैं, कन्याएं इस पर भी चिंतन और भावना करें।' समणी निश्चयप्रज्ञा की समणी दीक्षा के साथ मूल फतेहगढ़ के संघवी परिवार की यह आठवीं दीक्षा है। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया। कार्यक्रम में उपस्थिति अच्छी रही।

आचार्यप्रवर का गांधीधाम के अमर पंचवटी में त्रिदिवसीय प्रवास सेक्टर-२ स्थित श्री अमरचन्दजी सिंघवी के सुपुत्र श्री अशोक सिंघवी के आवास पर हुआ। तीसरे दिन का रात्रिकालीन प्रवास श्री रमेश सिंघवी के मकान में हुआ।

श्रेयस्कर है धर्म-प्रवचन का श्रवण

१६ अप्रेल। आज अमर पंचवटी से विहार कर आचार्यवर झंडा चौक के पास स्थित विशाल तेरापंथ भवन में पधारे। आजका रात्रिकालीन प्रवास यहीं हुआ। मार्ग में पूज्यश्री बागड़ बे चौबीसी स्थानक में पधारे। कई घरों का स्पर्श करते हुए आचार्यवर लगभग दस बजे तेरापंथ भवन में पहुंचे।

डॉ.सी.जी.हाईस्कूल के प्रांगण में आयोजित प्रातःकालीन कार्यक्रम में स्थानीय तेयुप अध्यक्ष श्री राकेश सेठिया एवं श्रीमती रेखा भंसाली ने अपने उद्‌गार व्यक्त किए। स्कूल के मुख्य ट्रस्टी श्री कुन्दनभाई गवलाणी ने आचार्यवर का स्वागत किया। तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री संजय धारीवाल ने फोरम की विभिन्न प्रवृत्तियों की जानकारी दी। फोरम की चौबीसवीं गांधीधाम शाखा का आज से प्रारंभ हुआ। इसके अध्यक्ष के रूप में श्री मुकेश सिंघवी के नाम की घोषणा हुई। राष्ट्रीय महामंत्री श्री सलिल लोढ़ा ने नई शाखा के पदाधिकारियों व सदस्यों को शपथ दिलाई।

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने 'श्रावक जीवन की सार्थकता' विषय पर मंगल प्रवचन करते हुए कहा--'जैन धर्म में आशातना को गलत माना गया है। बड़ों की अवहेलना व उनके प्रति अशिष्ट व्यवहार को भी अवांछनीय माना गया है। साधु के द्वारा भी श्रावक की अवमानना नहीं होनी चाहिए। साधना की दृष्टि से साधु व श्रावक के रूप में दो वर्गीकरण किए गए हैं। साधु त्यागी, पूजनीय व प्रातः स्मरणीय होते हैं। श्रावक-श्राविका सामान्य रूप से गार्हस्थ्य का जीवन जीने वाले होते हैं। घर में रहते हुए भी वे अंशतः त्यागमय जीवन जीने वाले होते हैं। श्रावक वह होता है जो धर्म प्रवचन सुनता है। धर्म प्रवचन व वीतराग वाणी का श्रवण करना श्रेयस्कर है। वे श्रावक धन्य हैं, जो जीवनोपयोगी कल्याणी वाणी सुनने हेतु अपना

समय नियोजित करते हैं। धर्म प्रवचन सुनने वाला श्रावक अपने समय को कितना सार्थक बनाता है। उस समय पापमय आचरण से उसका कितना बचाव हो जाता है। धर्म प्रवचन सुनने से कई नई जानकारियां प्राप्त हो सकती हैं। कई बार धर्म प्रवचन सुनने से व्यक्तिगत समस्या के समाधान-सूत्र भी प्राप्त हो सकते हैं। श्रावक में श्रद्धा घनीभूत हो, यथार्थ दृष्टि हो, तत्त्वज्ञान का विकास हो, विवेकशीलता और क्रियाशीलता हो, त्याग की चेतना हो।'

तेरापंथी श्रावकों की गुरुनिष्ठा की श्लाघा करने के उपरान्त तेरापंथ भवन में आगमन के संदर्भ में आचार्यवर ने कहा--'आज हम गांधीधाम के तेरापंथ भवन में आए हैं। तेरापंथ भवन सामायिक आदि धर्मोपासना का स्थान है। यह सामाजिक स्थान है तो सामाजिक कार्य भी यहां होते होंगे। इस तेरापंथ भवन के साथ धार्मिक भाव जुड़ा हुआ प्रतीत हुआ। सरदारशहर निवासी गांधीधाम प्रवासी श्री मालचन्दजी दूगड़ की स्मृति करते हुए आचार्यवर ने कहा--'यहां आने पर मालचन्दजी की सहज ही स्मृति हो गई। वे हमारे पास आते तो साहित्य आदि पर चर्चा करते। वे सम्पर्क रखने वाले अच्छे श्रावक थे। उनके परिवार में भी धर्म के अच्छे संस्कार परिलक्षित हुए।'

आचार्यवर ने प्रसंगवश कहा--'गांधीधाम के बाबूलालजी सिंघवी शान्त, विनीत, श्रमशील व ध्यान रखने वाले अच्छे श्रावक लगे। वे अमरचन्दजी सिंघवी परिवार से हैं और पांच भाई हैं। हमारे असाढ़ा प्रवास की व्यवस्था से जुड़े हुए थे। अभी कच्छ प्रवास व्यवस्था समिति के संयोजक हैं, आगे जोधपुर से भी संपृक्त हैं। भुज में गुजराती श्रावक मुख्य रूप से थे। गांधीधाम में राजस्थानी लोग बड़ी संख्या में हैं। सभी में धर्म की भावना बनी रहे। यहां अन्य संप्रदाय के साधु-साध्वियों से भी मिलकर प्रसन्नता हुई।

गांधीधाम में टीपीएफ की चौबीसवीं शाखा के शुभारंभ पर आचार्यवर ने कहा--'तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम के सदस्य बौद्धिक हैं। बौद्धिकता एक उपलब्धि है। इसका सदुपयोग होना चाहिए। इसके साथ-साथ जैन धर्म व दर्शन के ज्ञान में भी अभिवृद्धि हो।' कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

मध्याह्न में पूज्य आचार्यवर भवन के ऊपरी हॉल में पधारे। वहां कुछ क्षण विराज कर 'हमारे भाग्य बड़े बलवान' गीत का संगान किया। रात्रि में मंगलभावना समारोह का आयोजन हुआ, जिसमें अनेक लोगों के गीत व वक्तव्य हुए।

गांधीधाम में चला श्रम अविराम

गांधीधाम का तीन चरणों में पंचदिवसीय प्रवास प्रभावी रहा। नगर प्रवेश का पहला दिन अष्टमंगल सोसायटी में रहा तो पांचवां दिन तेरापंथ भवन में रहा। तलघर, भूमितल सहित चार तलवाला यह भवन विशाल है और मुख्य मार्ग पर अवस्थित है। इसमें विशाल हॉल है। मध्यवर्ती त्रिदिवसीय प्रवास अमर पंचवटी, सेक्टर-२ स्थित अमरचन्दजी सिंघवी के पांच पुत्रों-सुखराजजी, बाबूलालजी, त्रिभुवनजी, अशोकजी व रमेशजी के पांच बंगलों में अशोकजी के घर पर हुआ। आचार्यप्रवर के प्रातःकालीन प्रवचनों का न केवल तेरापंथी, अपितु इतर तेरापंथी व जैनेतर लोगों ने पूरा लाभ उठाया।

कहने को गांधीधाम में पांचदिवसीय प्रवास रहा, पर इसमें भी चरणस्पर्श व दर्शन देने हेतु आचार्यवर को लगभग पैंतीस किमी. का परिभ्रमण करना पड़ा। आचार्यवर एक दिन एक घर में पधार रहे थे, उस समय वहां स्थित वृक्ष से छोटे-छोटे पुष्प गिरे हुए थे। आचार्यवर मुड़ गए। दूसरे दिन एक किमी. का अतिरिक्त चक्कर लेकर पूज्यवर ने उस घर में चरणस्पर्श कर परिवारजनों को मनस्तोष प्रदान किया। परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर साक्षात् श्रममूर्ति व करुणामूर्ति हैं। प्रातः अविराम, अविश्रान्त तीन-चार घंटे आप अपने श्रम एवं अमूल्य समय का नियोजन करते हैं। कितने-कितने घरों का स्पर्श करने एवं मंगलपाठ सुनाने का दौर चलता रहता है। स्वेद से अभिस्नात गात आपश्री के श्रम के इतिवृत्त को प्रस्तुति देते हैं। स्थान पर पधारते

ही आचार्यवर कुछ क्षणों के अनंतर प्रवचन स्थल पर पधार जाते और अपनी अमृतमयी देशना से सबको तृप्त करते।

गांधीधाम से लगभग तेरह किमी. दूर कांडला पोर्ट है। भारत-पाक विभाजन के बाद पश्चिमी क्षेत्र का सबसे बड़ा बन्दरगाह कराची पाकिस्तान में चला गया। भारत में उसके समानान्तर कांडला पोर्ट विकसित किया गया। बताया गया--सत्रह जेटी (स्टेशन) में सामान के आयात व निर्यात का क्रम सतत चलता रहता है। आचार्यवर की आज्ञा से साधुओं के दो व साध्वियों का एक बैच कांडला पोर्ट गए। पोर्ट पर खड़े हजारों टन की क्षमता वाले मालवाही पोतों पर चढ़कर वहां की गतिविधियों का अवलोकन किया। विशाल क्रेनों के द्वारा लादे और उतारे जा रहे सामान, उसकी चेकिंग और सुरक्षा का दृश्य चकित कर देने वाला था। मालवाही पोतों में ही स्टॉफ के आवास और भोजन की माकूल व्यवस्था होती है। यहां का सारा काम प्रायः मशीनी है। विशाल क्रेनें सैकड़ों टन माल को शीघ्रता से जहाज पर लोड और अनलोड कर देती हैं। पोर्ट पर खड़ी छोटी नौकाएं अनपेक्षित मिट्टी व पत्थरों को एक लेबल तक निकाल कर तट पर जमा कर देती हैं। जिसे हजारों आदमी संयुक्त रूप से नहीं कर सकते, उसे मशीन क्षण भर में कर देती है। मानव और उसके द्वारा निर्मित यंत्रों का खेल यहां दिन-रात चलता रहता है।

गांधीधाम में मूर्तिपूजक परिवार ५००, स्थानकवासी ३००, दिगम्बर १०० तथा तेरापंथी परिवारों की संख्या लगभग ७५ है। आचार्यवर के पदार्पण से पूरे जैन समाज में ही नहीं, सभी वर्गों में उत्साह परिलक्षित हुआ। मध्याह्न में सभी श्रद्धालु परिवारों का प्रारंभिक प्रतिलेखन मुनि जितेन्द्रकुमारजी ने संभाला। बाद में सभी ने आचार्यवर का प्रेरणा-पाथेय प्राप्त किया। रात्रि में विषयबद्ध कार्यक्रम चले। आचार्यवर के प्रेरक उद्‌बोधन हुए। रात्रिकालीन कार्यक्रमों का संचालन मुनि पुलकितकुमारजी ने किया। एकदिवसीय दंपति शिविर भी उपयोगी रहा।

गांधीधाम प्रवास में एक उपलब्धिपूर्ण कार्यक्रम रहा सापेक्ष अर्थशास्त्र पर आयोजित द्विदिवसीय सम्मेलन। इसकी समायोजना में मुनि अक्षयप्रकाशजी, वीर नर्मद दक्षिण गुजरात युनिवर्सिटी के पूर्व कुलपति डॉ.बी. एस. प्रजापति का भी योगदान रहा। प्रजापतिजी की सक्रियता व व्यापक सम्पर्क के कारण इस सम्मेलन में चार कुलपतियों--हेमचन्द्राचार्य उ ार गुजरात युनिवर्सिटी के प्रो. एच. वी. राव, कच्छ युनिवर्सिटी के कुलपति एच. वी. हाथी, सोमनाथ संस्कृत युनिवर्सिटी के कुलपति प्रो. वी. के. शास्त्री, गणपति युनिवर्सिटी के कुलपति एल. एन. पटेल, जैविभा संस्थान मान्य विश्वविद्यालय की कुलपति समणी चारित्रप्रज्ञाजी ने सहभागिता की। सम्मेलन में दो पूर्व कुलपतियों ने भी भाग लिया। गुजरात इकोनोमिक एसोशियेशन के अध्यक्ष प्रो. रोहित शुक्ला की सहभागिता महत्त्वपूर्ण रही। दो विश्वविद्यालयों के रजिस्ट्रारों ने भी सक्रिय भूमिका निभाई।

तेरापंथ भवन में प्रवेश से पूर्व झंडा चौक से तेरापंथ भवन की ओर आने वाले मार्ग का नाम **'आचार्य तुलसी मार्ग'** का लोकार्पण किया गया।

गांधीधाम प्रवास के दौरान कार्यक्रम में सहभागी बनने व दर्शन हेतु जिन विशिष्ट व्यक्तियों का आगमन हुआ, उनमें प्रमुख थे--कच्छ की सांसद श्रीमती पूनमबेन जाट, भुज की विधायक श्रीमती नीमाबेन आचार्य, गांधीधाम के विधायक श्री रमेश माहेश्वरी, मांडवी के विधायक श्री ताराचन्द छेड़ा, अंजार के विधायक श्री वासणभाई आहीर, कच्छ जिला भाजपाध्यक्ष श्री पंकजभाई मेहता, एस.आर.सी. की चेयरपर्सन निर्मला गजवानी, लेबर वेलफेयर कमीशन के वाइस चेयरमैन श्री प्रेमकुमार जैन, गांधीधाम विकास प्राधिकरण के चेयरमैन श्री मधुकान्त शाह, आर्यसमाज के प्रमुख श्री वासुनिधि, गांधीधाम चेम्बर ऑफ कॉमर्स के अध्यक्ष श्री दिनेश गुप्ता, कस्टम विभाग के सहायक कमिश्नर श्री पारसमल सांखला, कांडला पोर्ट ट्रैफिक मैनेजर श्री मुकेश बालाणी, स्थानकवासी समाज के प्रमुख श्री अनोपचन्द मोरबिया, मूर्तिपूजक समाज के प्रमुख श्री चंपालाल पारख, दिगम्बर समाज के प्रमुख श्री राजकुमार सरावगी आदि।

गांधीधाम से विहार

१७ अप्रेल। परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने प्रातः गांधीधाम के तेरापंथ भवन से प्रस्थान किया और अवशिष्ट तेरापंथी श्रद्धालुओं के घरों को अपनी चरणरज से पावन किया। पूज्यप्रवर के अपने घर में पदार्पण से श्रद्धालु धन्यता की अनुभूति कर रहे थे। गांधीधाम में प्रवास के दौरान आचार्यवर ने लगभग पैंतीस किमी. का अतिरिक्त विहार कर प्रायः सभी तेरापंथी घरों का स्पर्श किया। केवल दो घर अत्यधिक दूरी के कारण पूज्यवर के स्पर्श से वंचित रहे। हालांकि आचार्यवर ने उनके घरों के लिए लगभग छह किमी. का अतिरिक्त विहार करना भी स्वीकार कर लिया था, किन्तु साध्वीप्रमुखाजी के विनम्र साग्रह निवेदन पर आचार्यवर वहां नहीं पधारे। ऐसे में चरणस्पर्श से वंचित श्रावकों का निराश होना स्वाभाविक था। उनमें से एक श्रद्धालु परिवार की दुकान आज विहार पथ में ही थी। पड़िहारा निवासी स्व.रतनीदेवी सुराणा (राणीजी) के सुपुत्र श्री केवलचन्दजी सुराणा और उनका परिवार पूज्यवर से अपनी दुकान में पधारने की प्रार्थना करने लगा। ज्ञातव्य है कि आचार्यप्रवर सामान्यतया व्यावसायिक प्रतिष्ठानों में नहीं पधारते। चूंकि स्वीकृति के पश्चात भी आचार्यवर का उनके आवास पर पदार्पण नहीं हो सका, इसलिए पूज्यवर उनकी दुकान में पधारे और वहां कुछ क्षण विराजमान हुए। सुराणा परिवार आचार्यवर की पावन सन्निधि प्राप्त कर आह्लादित था। उल्लेखनीय है--पड़िहारा का यह सुराणा परिवार अनेक बार आचार्यों के शय्यातर होने का सौभाग्य प्राप्त कर चुका है। परिवार की मुखिया और राणीजी के नाम से प्रसिद्ध स्वर्गीया रतनीदेवी सुराणा एक श्रद्धाशील और सेवाभावी श्राविका थीं। सुराणा परिवार के सदस्यों ने पड़िहारा प्रवास के दौरान शय्यातर का लाभ प्रदान करने हेतु प्रार्थना की। पूज्यप्रवर ने अनुग्रहवृष्टि करते हुए कहा--'सन २०१३ के लाडनूं चतुर्मास के पश्चात जब पड़िहारा जाना होगा, उस समय राणीजी के यहां प्रवास करने का भाव है।' आचार्यवर के मुखारविन्द से यह घोषणा सुनकर संपूर्ण परिवार हर्षविभोर हो गया।

पूज्यवर की कच्छ यात्रा के दौरान २९ मार्च २०१३ को शासनश्री मुनि राजेन्द्रकुमारजी का कोटड़ा गांव में स्वर्गवास हो गया था। उनका अन्तिम संस्कार गांधीधाम में हुआ था। आज मार्ग में आचार्यवर उनके स्मारक पर पधारे और उसका अवलोकन करने के उपरान्त वहां कुछ क्षण ध्यान किया। १२.०४ किमी. का विहार कर आचार्यवर पडाणा पधारे। 'लक्ष्य बिजनेस सेंटर' नामक स्थान में आज का प्रवास रहा।

पवित्र रहती है सानुकंप आत्मा

प्रातःकालीन कार्यक्रम में परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में कहा--'व्यक्ति के जीवन में अनुकंपा भाव पुष्ट होता है तो जीवन पवित्र बन जाता है। सानुकंप व्यक्ति अपनी आत्मा को पापों से बचाने का प्रयास करता है। निरनुकंप व्यक्ति पापाचरण ज्यादा करता है। अनुकंपा के दो प्रकार हैं--लौकिक और लोकोत्तर। लौकिक अनुकंपा देह और लोकोत्तर अनुकंपा आत्मा से संबद्ध होती है। देह संबंधी कष्ट दूर कर किसी को सुख पहुंचाने का प्रयास करना लौकिक अनुकंपा है। किसी भूखे को भोजन कराना, किसी प्यासे को पानी पिलाना आदि दैहिक-लौकिक अनुकंपा है। जो दूसरों का उपकार करता है, दूसरे उसे सम्मान की दृष्टि से देखते हैं। किसी आत्मा के कल्याण का प्रयास आत्मा से संबंधित उपकार है, लोकोत्तर अनुकंपा है। संसार में लौकिक अनुकंपा का और अध्यात्म की दृष्टि से लोकोत्तर अनुकंपा का महत्त्व होता है। किसी को प्रतिबोधित कर हृदय परिवर्तन के द्वारा उसकी आत्मा के उद्धार का प्रयास बहुत महत्त्वपूर्ण कार्य होता है।'

पूज्य आचार्यवर ने आगे कहा--'दानों में अभयदान को श्रेष्ठ कहा गया है। किसी को न मारने का संकल्प अभयदान है। साधु अभयदाता होता है अथवा होना चाहिए। किसी को कष्ट नहीं पहुंचाना अहिंसा

की साधना है। जिस व्यक्ति में दया का भाव होता है, वही अहिंसा की साधना कर सकता है। अनुकंपाशील मानव की आत्मा पवित्र रह सकती है।'

कार्यक्रम में लाकड़िया निवासी मुम्बई प्रवासी श्री बाबूभाई ने अपने उद्‌गार व्यक्त किए। मोमासर निवासी जयपुर प्रवासी शासनसेवी श्री उत्तमचन्दजी सेठिया का गत दिनों स्वर्गवास हो गया। इस संदर्भ में उनके पारिवारिकजन आज संबल प्राप्ति हेतु गुरुचरणों में उपस्थित हुए। कार्यक्रम में श्री राजकुमार बरड़िया, श्रीमती पुष्पा नाहटा, स्व.सेठियाजी की सुपुत्री श्रीमती सरोज भंडारी एवं मोमासर के सरपंच श्री दानारामजी ने अपनी भावाभिव्यक्ति दी।

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने इस संदर्भ में कहा--'उत्तमचन्दजी सेठिया न केवल मोमासर और जयपुर के, अपितु तेरापंथ समाज के एक विशिष्ट व्यक्ति थे। उन्होंने अनेक रूपों में धर्मसंघ की सेवा की। वे अनेक विशेषताओं वाले व्यक्ति थे। वे चले गए। पीछे परिवार में धर्म के अच्छे संस्कार बने रहें।'

अंकुश रहे अर्थ और काम पर

१८ अप्रेल। परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने आज प्रातः पडाणा से १५ किमी. का विहार कर नेशनल हाइवे पर स्थित चोपड़वा गांव के निकट अंकुर केमफूड लिमिटेड में पधारे। तेरापंथी ढेलड़िया परिवार, मूर्तिपूजक जैन पारख परिवार और अग्रवाल परिवार अपने व्यावसायिक प्रतिष्ठान में आचार्यवर का एकदिवसीय प्रवास प्राप्त कर प्रमुदित था। प्रातःकालीन कार्यक्रम में ढेलड़िया परिवार की महिलाओं ने गीत के द्वारा आचार्यवर का स्वागत किया। श्री अशोक ढेलड़िया, श्री खूबचन्द भंसाली एवं श्री चंपालाल पारख ने पूज्यचरणों में अपने भावसुमन अर्पित किए। संसारपक्ष में जसोल निवासी ढेलड़िया परिवार से संबद्ध साध्वी गौरवप्रभाजी एवं साध्वी लब्धियशाजी ने अपनी भावाभिव्यक्ति दी।

परम पावन आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में कहा--'दुनिया में त्रिवर्ग चलता है। काम, अर्थ और धर्म--यह त्रिवर्ग कहलाता है। गृहस्थ जीवन में काम और अर्थ चलता है तो साथ में धर्म की भी अपेक्षा रहती है। त्रिवर्ग में धर्म को श्रेष्ठ कहा गया है। जीवन में धर्म नहीं तो अर्थ और काम व्यक्ति को उच्छृंखलता में ले जा सकते हैं। अर्थ और काम पर धर्म का अंकुश रहना चाहिए, अन्यथा वे निरंकुश हो जाते हैं। गृहस्थ के लिए अर्थ आवश्यक होता है, किन्तु अर्थार्जन के साधन शुद्ध रहने चाहिए। यदि अर्जन के साधन शुद्ध होते हैं तो अर्थ एक सीमा तक व्यक्ति अनैतिकता के पाप से बच जाता है। लोभ के कारण हो जाता है। अशुद्ध साधनों से अर्जित अर्थ गरिमापूर्ण नहीं होता।'

आचार्यवर ने आगे कहा--'व्यक्ति को अति विलास में नहीं जाना चाहिए। अति लोभ भी वांछनीय नहीं होता। दूसरों के हक को छीनने का मानस नहीं होना चाहिए। यदि दूसरों के अधिकार की वस्तु न लेने का संकल्प रहता है तो मानना चाहिए कि अर्थ पर धर्म का अंकुश है। अर्थार्जन के पश्चात उसके उपभोग में विवेक है या नहीं, यह विवेच्य विषय है। इच्छाओं का परिसीमन, व्यक्तिगत उपभोग में संयम तथा उसके प्रति ज्यादा आसक्ति न हो तो अर्थ पर कुछ अंशों में धर्म का अंकुश रह सकता है। इसी प्रकार स्वदार-स्वपति संतोष व्रत रहता है, इन्द्रिय संयम की साधना रहती है तो काम पर धर्म का अंकुश रह सकता है। गार्हस्थ्य में भी यथासंभव धर्म की आराधना होती रहती है तथा अर्थ और काम पर धर्म का अंकुश रहता है तो आत्मा कल्याण की दिशा में आगे बढ़ सकती है।'

पूज्यवर ने अपने प्रवचन के उपरान्त 'अंकुर केमफूड लिमिटेड' से जुड़े हुए ढेलड़िया परिवार, पारख परिवार, अग्रवाल परिवार तथा विशेष रूप से स्व.देवराजजी ढेलड़िया का उल्लेख करते हुए कहा--'तेरापंथ धर्मसंघ में ढेलड़िया परिवार का अच्छा योगदान है। साध्वी स्मितप्रभा, साध्वी गौरवप्रभा और साध्वी लब्धियशा--ये तीनों साध्वियां संसारपक्ष में ढेलड़िया परिवार से संबद्ध हैं। तीनों साध्वियां खूब अच्छी साधना

और अच्छा विकास करें, खूब प्रसन्न रहें।' आचार्यवर ने फैक्ट्री में कार्यरत कर्मचारियों को नशामुक्ति की प्रेरणा प्रदान की। अनेक कर्मचारियों ने नशामुक्ति का संकल्प स्वीकार किया।

कब आएगा वह धन्य दिवस

१६ अप्रेल। परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने प्रातः वोंध के लिए विहार किया। मार्गवर्ती स्वामीनारायण गुरुकुल में आचार्यवर का पदार्पण हुआ। स्वामी कृष्णदासजी शास्त्री ने आचार्यवर की ससम्मान अगवानी की। आचार्यवर ने गुरुकुल के विद्यार्थियों को पावन संबोध प्रदान करते हुए उन्हें नशामुक्ति का संकल्प करवाया। आचार्यवर ने उनसे स्वामीनारायण सम्प्रदाय के संन्यासीवर्ग की आचारसंहिता के विषय में अवगति प्राप्त की। शास्त्रीजी ने पूज्यप्रवर से पुनरागमन की प्रार्थना की।

लगभग १५.०१ किमी. का विहार कर आचार्यप्रवर आज दूसरी बार वोंध पधारे। यहां आपका प्रवास सरकारी स्टॉफ क्वार्टर्स में हुआ। प्रातःकालीन कार्यक्रम में परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने अपने मंगल उद्‌बोधन में कहा--'श्रावक बनना बड़ी बात होती है। मेरा तो यह चिंतन है कि अध्यात्म की दृष्टि से राजा-महाराजा, वासुदेव और सम्राट से भी बड़ा श्रावक होता है। 'श्रावक' एक पदवी मानी गई है। कितने-कितने लोग धर्म से अपरिचित हैं, भोगप्रधान जीवनशैली अपनाए हुए हैं। कितने ही लोग नास्तिक विचारधारा वाले भी हो सकते हैं। उनकी तुलना में श्रावक कितना बड़ा होता है। वह मोक्ष की दिशा में गति कर चुका होता है। श्रावक को अपने श्रावकत्व में निखार लाने का प्रयास करना चाहिए।'

पूज्यवर ने आगे कहा--'साधना के क्षेत्र में भावना का बड़ा महत्त्व होता है। आत्मा के उत्थान और पतन--दोनों का मुख्य जिम्मेदार भाव होता है। भावना जितनी पवित्रता से परिपूर्ण होती है, अध्यात्म से ओतप्रोत होती है, व्यक्ति उतना ही आध्यात्मिक उन्नति की ओर आगे बढ़ता है। भावना मलिन होती है तो व्यक्ति चारित्रिक अवनति की दिशा में आगे बढ़ता है। श्रावक के लिए तीन भावनाएं निर्दिष्ट की गई हैं। उनमें पहली भावना है--मैं अल्प या बहु परिग्रह का प्रत्याख्यान कब करूंगा। धन्य हैं निर्ग्रंथ, जो परिग्रह से पूर्णतया मुक्त होते हैं। गृहस्थ परिग्रह से युक्त होता है। हजारों करोड़ की संपत्ति पास में होते हुए भी गृहस्थ साधु के सामने बौना होता है। गृहस्थ को परिग्रह की सीमा करनी चाहिए, यह विसर्जन है। परिग्रह कुछ तनाव का भी निमित्त बन सकता है। जिसके पास कुछ नहीं होता, वह गृहस्थ भी दुःखी रह सकता है तो जिसके पास अतिरिक्त साधन और संपत्ति होती है, वह भी दुःखी रह सकता है। एक अपेक्षा से गृहस्थ का जीवन ज्यादा कठिन होता है। गृहस्थ को परिग्रह के लिए कितनी चिन्ता करनी होती है, जबकि साधु चिन्तामुक्त होता है अथवा होना चाहिए। श्रावक यह सोचे कि वह दिन धन्य होगा, जब मैं परिग्रह का अल्पीकरण करूंगा।

श्रावक के लिए दूसरी भावना निर्दिष्ट की गई--वह दिन धन्य होगा, जब मैं मुंड होकर अणगार बन जाऊंगा। साधु धन्य हैं जो पांच महाव्रतों की अनुपालना कर रहे हैं। गृहस्थ सोचे कि मुझे भी कभी न कभी साधुत्व आ जाए। साधुत्व प्राप्त हो अथवा नहीं, किन्तु इस प्रकार की भावना भी निर्जरा का हेतु बनती है। यदि भावना तीव्र होती है इस जन्म में नहीं तो अग्रिम जन्मों में साधु बनने का अवसर मिल सकता है।

भावना का तीसरा विषय बताया गया--वह दिन धन्य होगा, जिस दिन मैं मरणान्तिक संलेखना को प्राप्त हो जाऊंगा। जीवन का अंत रोते-रोते, सोते-सोते, परमार्थ को खोते-खोते, कपड़े धोते-धोते न हो। जीवन का अन्त धर्माराधना करते-करते हो, यह वांछनीय है। श्रावक यह अनुचिंतन करे कि मेरा अन्तिम समय संथारे की स्थिति में आए। रात में कभी नींद टूट जाए तो नीरव वातावरण में थोड़ी देर अपनी आत्मा के लिए चिंतन करना चाहिए, धर्मजागरिका करनी चाहिए कि वह समय आ जाए, जब मैं परिग्रह

का अल्पीकरण करूं, जब मैं मुंड होकर साधु बन जाऊं और कभी वह समय भी आए, जब मैं अनशन की स्थिति में प्राण त्याग करूं। जो व्यक्ति भविष्य के बारे में सोच कर वर्तमान जीवन अच्छा जीता है, वह अध्यात्म की दिशा में आगे बढ़ सकता है।'

कार्यक्रम में मंत्री मुनिश्री का प्रेरक वक्तव्य हुआ। समणी कमलप्रज्ञाजी और समणी सुमनप्रज्ञाजी ने गीत का संगान किया।

आचार्य भिक्षु अभिनिष्क्रमण दिवस

२० अप्रेल। परमाराध्य आचार्यप्रवर वोंध से १४.०२ किमी. का विहार कर संतश्री संन्ध्यागिरि बापू संस्कृत वेद विद्यालय में पधारे। आज का प्रवास यहीं हुआ। प्रधानाचार्य श्री विपुलजी महाराज, ट्रस्टी श्री बाबूभाई हुंबल एवं श्री केशवभाई आदि ने पूज्यप्रवर की भावपूर्ण अगवानी की।

चैत्र शुक्ला नवमी, आचार्य भिक्षु का अभिनिष्क्रमण दिवस। प्रातःकालीन कार्यक्रम में विद्यालय के ऋषिकुमारों ने वेद मंत्रों के द्वारा आचार्यवर को वर्धापित किया। प्रधानाचार्य श्री विपुलजी महाराज, ट्रस्टी श्री बाबूभाई हुंबल ने अपनी भावाभिव्यक्ति दी। श्री प्रभुभाई मेहता (भुज) ने आचार्य भिक्षु के प्रति अपनी श्रद्धाप्रणति अर्पित की।

मंत्री मुनिश्री ने अपने वक्तव्य में कहा--'आज रामनवमी है। 'राम' ऐसा पवित्र शब्द है, जिसके उच्चारण के साथ व्यक्ति के भीतर अध्यात्म की तरंगें उछाल लेने लग जाती हैं। आचार्य भिक्षु की धर्मक्रान्ति के प्रारंभ का दिन भी आज है। उन्होंने साधना के लिए प्राप्त सुविधाओं और अपने गुरु का भी परित्याग कर दिया। क्रान्ति वही कर सकता है, जो अपने साध्य की प्राप्ति हेतु सब कुछ ठुकराने की सामर्थ्य रखता हो। आचार्य भिक्षु की धर्मक्रान्ति का प्रतिफल है--तेरापंथ। आज के दिन हम भगवान राम और आचार्य भिक्षु की स्मृति ही न करें, अपितु अध्यात्म के क्षेत्र में प्रगति करने हेतु स्वयं को और अधिक जागरूक व संकल्पित बनाएं।

महाश्रमणी साध्वीप्रमुखा कनकप्रभाजी ने अपने संबोधन में कहा--'आचार्य भिक्षु ने अपने जीवन में कुछ ऐसे कार्य किए, जिन्हें साधारण व्यक्ति नहीं कर सकते। उन्होंने जन्म लिया, सांसारिक जीवन जीया, किन्तु संसार में रहते हुए भी वे अनासक्त रहे। उनका ध्यान शरीर पर नहीं, आत्मा पर था। उनके जीवन में कितने कष्ट आए, किन्तु वे हंसते-खिलते आगे बढ़ते रहे। अभिनिष्क्रमण का प्रथम दिन और रात वे जिस प्रकार रहे, वैसा करना साधारण व्यक्ति के लिए बहुत कठिन होता है। वे घबराए नहीं, निडरतापूर्वक आगे बढ़े और मंजिल को प्राप्त किया। आचार्य भिक्षु का विचार-दर्शन विश्व को नया पथ दिखाए और उस राह पर चलकर विश्व सुख को प्राप्त करे। उस महापुरुष के चरणों में विनत प्रणतियां।' महाश्रमणीजी ने इस अवसर पर काव्य-स्वरों में भी आचार्य भिक्षु को अपने भावसुमन अर्पित किए।

परम पावन आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में कहा--'अभिनिष्क्रमण एक महत्त्वपूर्ण बात होती है। केवल निकलना बड़ी बात नहीं होती। किसी अच्छे लक्ष्य के साथ प्रस्थान करना अपने आप में बड़ी बात होती है। आज चैत्र शुक्ला नवमी और आचार्य भिक्षु अभिनिष्क्रमण दिवस है। आचार्य भिक्षु जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के संस्थापक आचार्य थे। तेरापंथ की स्थापना के पीछे उनका सबल मनोबल, सूझबूझ और आत्मार्थ भाव प्रतीत हो रहा है। उन्होंने दो बार अभिनिष्क्रमण किया। प्रथम बार घर से अभिनिष्क्रमण कर स्थानकवासी आचार्य रघुनाथजी महाराज के पास दीक्षा स्वीकार की। संत भीखणजी के पास विशिष्ट बुद्धि वैभव था। उनमें अनेक विशेषताएं थीं। एक ओर सबल वैराग्य था तो दूसरी ओर मेधा का भी अच्छा योग उनमें था। उनमें तार्किक प्रतिभा थी। अपने बुद्धि वैभव के आधार पर दीक्षा के बाद कुछ ही वर्षों में उन्होंने बहुत ज्ञान अर्जित कर लिया। वे अपने गुरु के विश्वासपात्र मुनि थे, ऐसा प्रतीत होता है।'

पूज्यवर ने आगे कहा--'संत भीखणजी ने आज के दिन दूसरा अभिनिष्क्रमण किया। सुविधा के मार्ग को छोड़कर उन्होंने मानों कंटकाकीर्ण पथ स्वीकार किया। उनमें कोई विशिष्ट चिंतनशीलता और समझाने की विरल शक्ति थी। वह कोई पुण्यवान आत्मा थी। मानों वे कोई भावितात्मा अणगार संत थे। उनके सामने विरोध और कठिनाइयां आईं, किन्तु एक सुन्दर समुदाय गठित हो गया। उस समय का कंटकाकीर्ण पथ आज तेरापंथ के रूप में राजपथ बना हुआ है। अभिनिष्क्रमण दिवस के अवसर पर मैं महामना आचार्य भिक्षु के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं। उनकी साधना-तपस्या से सबको प्रेरणा मिलती रहे और यथार्थ की खोज व प्राप्ति के लिए हम निष्ठा के साथ प्रयत्नशील बने रहें।'

पूज्यवर ने अपने प्रवचन के उपरान्त संस्कृत वेद विद्यालय के छात्रों को भी पावन संबोध प्रदान किया।

योग में न आए कषाय

२१ अप्रेल। प्रातः लगभग बारह किमी. का विहार कर आचार्यप्रवर शिवलखा पावर स्टेशन पधारे। वहां सरकारी क्वार्टर्स में आपका प्रवास हुआ। संत संन्ध्यागिरि संस्कृत वेद विद्यालय से विहार करते ही पूज्यवर उससे संलग्न संन्ध्यागिरि गोशाला में पधारे। गोशाला और विद्यालय की देखरेख में संलग्न स्वामी भगवतगिरिजी ने आचार्यवर का स्वागत किया और पुनरागमन की प्रार्थना की। आज आचार्यवर के आगमन के संदर्भ में अपने पूर्व निर्धारित कार्यक्रम को स्थगित कर स्वामी भगवतगिरिजी यहां पहुंचे थे।

मार्ग में लाकड़िया नगर के बाहर रेलवे क्रासिंग के निकट स्थानकवासी अजरामर लीमड़ी छहकोटि सम्प्रदाय की साध्वी उज्ज्वलकुमारीजी की शिष्या साध्वी दिनमणिजी आदि साध्वियां दर्शनार्थ आचार्यवर के उपपात में पहुंचीं। साध्वीजी ने भावपूर्ण शब्दों में कहा--'आचार्यश्री! आप जैन शासन की बहुत प्रभावना कर रहे हैं।' साध्वियों ने निवेदन किया--'हमें पाथेय रूप में आपसे कोई वाक्य मिल जाए, ऐसी कृपा करें।' आचार्यश्री ने इस संदर्भ में कहा--'कषाय योग में न आए।' बालमुनियों ने धम्मो मंगल मुक्किट्ठं... आर्षवाणी का उच्चारण किया। साध्वियों ने करबद्ध विनयपूर्वक कहा--'आज हम धन्य-धन्य बन गई हैं। हमें बहुत आनंद का अनुभव हुआ।'

आकृति हो चाहे असुन्दर, पर प्रकृति रहे सदा सुन्दर

२२ अप्रेल। प्रातः पन्द्रह किमी. का विहार कर आचार्यप्रवर खीरई पधारे। यहां प्राथमिक शाला में आपका प्रवास हुआ। गांव के सरपंच श्री वडूभाई जाडेजा व तीन जैन परिवारों के घरों में आचार्यवर ने चरणस्पर्श किए। प्रातःकालीन कार्यक्रम में गांधीधाम में दीक्षित समणी निश्चयप्रज्ञाजी को बड़ी दीक्षा के रूप में पूज्यवर ने उपसंपदा प्रदान की। मंत्री मुनिश्री का प्रेरक उद्‌बोधन हुआ।

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने अपने मंगल उद्‌बोधन में कहा--'जीवन में संगति का बड़ा महत्त्व है। किसी के आसपास व सम्पर्क में रहने का महत्त्व इसलिए है कि संगति का हमारे मनोभावों व जीवन व्यवहार में असर पड़ता है। भारतीय साहित्य में सत्संग की बात आती है। सज्जन व साधु का संसर्ग, अच्छी संगति व अच्छा सम्पर्क रखना सत्संग है। व्यक्ति आकृति से सुन्दर व असुन्दर हो सकता है और प्रकृति से अच्छा व बुरा हो सकता है। व्यक्ति आकृति से सुन्दर न भी हो, पर प्रकृति से सुन्दर अवश्य बनना चाहिए। व्यक्ति सदैव गुणवान के सम्पर्क में रहे और अगुणी के सम्पर्क से बचे।'

आचार्यप्रवर ने आगे कहा--'अच्छे सम्पर्क से व्यक्ति की इज्जत बढ़ती है, पापाचरण से बचाव हो जाता है और ज्ञान का विकास होता है। अच्छे गुण देखने, पढ़ने व सुनने से भी आ सकते हैं। अच्छे ज्ञानवर्द्धक साहित्य का पठन-पाठन करने व टीवी पर प्रवचन आदि सुनकर सम्यक् संस्कार अर्जित किए जा सकते हैं। खराब बातें सुनने व पढ़ने से संस्कार विकृत भी बन सकते हैं। अच्छे संस्कारवान लोगों से सम्पर्क

रखना उपयोगी होता है।' आचार्यवर ने खीरई के जैन परिवारों को धार्मिक भावना रखने व उसे पुष्ट बनाने की प्रेरणा प्रदान की।

रापर में आचार्यवर का भव्य स्वागत

२३ अप्रेल। चैत्र शुक्ला १२,१३, जैन धर्म के चौबीसवें तीर्थंकर भगवान महावीर का जन्मकल्याणक दिवस। आचार्यवर ने प्रातः खीरई से रापर के लिए विहार किया। मार्गवर्ती लीलपरपाटिया के पास ग्राम स्वराज संघ द्वारा संचालित विद्यालय के विद्यार्थियों व प्रबंध कमेटी के सदस्यों ने आचार्यवर का स्वागत किया। आचार्यवर ने अपने संक्षिप्त उद्‌बोधन में सद्‌गुणों के विकास की प्रेरणा देते हुए विद्यार्थियों को नशामुक्ति का संकल्प करवाया। यह विद्यालय साध्वी मूलांजी के संसारपक्षीय संघवी परिवार द्वारा निर्मित और संचालित है। परिवार की ओर से श्री दिनेशभाई संघवी ने पूज्यवर के अनुग्रह के प्रति आभार व्यक्त किया।

रापर प्रवेश से पूर्व आचार्यवर जीवदया मंडल पांजरापोल में पधारे। जुलूस में भगवान महावीर के सत्ताईस भवों को झांकियों के माध्यम से सुन्दर प्रस्तुति दी गई थी। मार्ग में 'अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य तुलसी मार्ग' का लोकार्पण हुआ। जुलूस भव्य, सुव्यवस्थित और विशाल था। जुलूस के मध्य आचार्यप्रवर स्थानकवासी छहकोटि अजरामर लीमड़ी सम्प्रदाय की ओर से की गई प्रार्थना पर आचार्यवर उनके स्थानक में पधारे और कुछ क्षण विराजमान हुए। वहां प्रवासित छायाबाई महासती व अन्य साध्वियों ने गुरु भगवंत की अगवानी करते हुए स्वागत किया। प्रशमश्रीबाई एवं यशोमतिबाई स्वामी ने भावपूर्ण विचाराभिव्यक्ति दी। एक भाई ने बताया--'आचार्य तुलसी अपनी कच्छ यात्रा के दौरान इस स्थानक में पधारे थे। आज आपश्री का भी पदार्पण हो गया। एक इतिहास बन गया।' आचार्यवर ने कहा--'परमपूज्य गुरुदेव तुलसी इस स्थानक में पधारे। हम उनके शिष्य हैं। हमने आज उसकी पुनरावृत्ति कर दी। साध्वियों से मिलकर प्रसन्नता हुई। सभी अच्छी साधना करते हुए जिनशासन की प्रभावना करती रहें।'

साध्वीजी ने पूछा--'कच्छ केनुं लाग्युं ?'

आचार्यवर ने कहा--'कच्छ सारूं लाग्युं।'

आज का विहार १४ किमी. का था, जुलूस परिभ्रमण के कारण लगभग १५.०५ किमी. हो गया। रापर में आचार्यवर का प्रवास श्री वर्धमान जैन श्रावक संघ आराधना भवन, एकतानगर में हुआ।

महावीर जयंती का भव्य आयोजन

आराधना भवन परिसर में स्थित वर्धमान समवसरण में महावीर जयंती का समायोजन संपूर्ण जैन समाज की ओर से समायोजित हुआ। कार्यक्रम का शुभारंभ पूज्यवर के मंगल महामंत्रोच्चार से हुआ। मुख्यनियोजिका साध्वी विश्रुतविभाजी ने अपने वक्तव्य में कहा--'भगवान महावीर का संकल्प बल बेजोड़ था। उनके जीवन के हर क्षेत्र में व हर मोड़ पर संकल्प का दर्शन होता है। उनके जीवन से प्रेरणा लेते हुए हम भी अपने संकल्पबल को जगाएं।'

मंत्री मुनिश्री ने अपने वक्तव्य में कहा--'भगवान महावीर व्यक्ति नहीं, संस्कृति के प्रतीक थे। वे आत्मकर्तृत्व दर्शन के प्रतिपादक थे। अपने प्रबल पुरुषार्थ के द्वारा वे प्रतिबुद्ध व सर्वज्ञ बने। उनका जीवन घटनाप्रधान है। उनके क्रान्तिकारी विचार हर युग के लिए प्रांसगिक हैं।'

महाश्रमणी साध्वीप्रमुखा कनकप्रभाजी ने अपने अभिभाषण में कहा--'महावीर जयंती मनाते समय महावीर की प्रासंगिकता का प्रश्न आता है। ढाई हजार वर्ष बाद आज भी उनकी प्रासंगिकता पर प्रश्नचिह्न नहीं लगा, बल्कि उनकी प्रासंगिकता बढ़ती जा रही है। उनका जीवन, उनका दर्शन, उनका कर्तृत्व महान

था। उन्होंने जिन मूल्यों को जीया, उन्हीं पर अनुयायियों को चलने हेतु शिक्षा दी। निस्तेज होते जा रहे धर्म को उद्दीप्त करने हेतु उन्होंने अध्यात्म की ज्योति प्रज्वलित की और बिना भेदभाव के जन-जन में उसके आलोक को बांटा। अनुशासनहीनता और चरित्रहीनता आज की सबसे बड़ी समस्या हैं। इनका समाधान-सूत्र महावीर वाणी में निहित है। हम अपनी जीवनशैली को महावीर द्वारा प्रदत्त मूल्यों के अनुरूप बनाएं।'

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में कहा--'आगम साहित्य में अहिंसा, संयम व तप शब्द प्रयुक्त हुए हैं। मैं भगवान महावीर को अहिंसामूर्ति, संयममूर्ति व तपोमूर्ति के रूप में देखता हूं। समाज व धर्म-सम्प्रदायों में अनेक पर्व, उत्सव व त्यौहार मनाए जाते हैं। महावीर जयंती जैन समाज का एक प्रमुख आयोज्य दिन है और इसके प्रति जैनों का अच्छा आकर्षण है। महावीर जयंती का कार्यक्रम कई बार जैनों के विभिन्न समुदायों को एक स्थान पर, एक मंच पर बैठने का सहज ही अवसर उपलब्ध करा देता है। जयंती व इस तरह के अन्य कार्यक्रमों के माध्यम से महापुरुषों की स्मृति हो जाती है और उनके जीवन-दर्शन पर चर्चा करने का अवसर प्राप्त हो जाता है। भगवान महावीर को हमने साक्षात नहीं देखा और देखा भी हो तो याद नहीं है। किन्तु अपने भीतर में उनके दर्शन कर सकते हैं।

भगवान महावीर ने अहिंसा की साधना की। वे करुणामूर्ति व अनुकंपावान थे। अहिंसा के लिए अभय की साधना अपेक्षित है। वे पूर्णतया अभय थे। केवलज्ञानी होने से वे परम सुखी आत्मा थे। अभयवान को न तो मृत्यु का भय होता है, न बीमारी, बुढ़ापे, मान-अपमान व कुछ खो जाने का भय। मैं भगवान महावीर को अभयमूर्ति के रूप में देखता हूं। वीतराग के वचन निःशंक व यथार्थ होते हैं। उनकी वाणी मिथ्या नहीं हो सकती। सम्प्रदाय अपने-अपने हो सकते हैं, पर उससे ज्यादा महत्त्वपूर्ण और सर्वोपरि सचाई है।'

जैन समाज द्वारा संचालित विद्या संस्थानों में जैन विद्या के अध्ययन को उपयोगी बताते हुए आचार्यवर ने कहा--'जैन विद्या का अध्ययन पवित्र कार्य है। जैन समाज महावीर का अनुयायी है। इस समाज द्वारा संचालित विद्या संस्थानों में किसी भी समुदाय का व्यक्ति पढ़ता है तो उसे जैन विद्या को समझने का अवसर मिलना चाहिए। जैन लोगों को तो विशेष रूप से जैनदर्शन का अध्ययन करना चाहिए। भगवान महावीर संयममूर्ति थे। उनकी इन्द्रिय, मन, वाक्, काय की संयम साधना अनुत्तर थी। उनकी तपस्या विशिष्ट थी। साधना काल में उनकी अनाहार साधना अनुपम थी। नहीं खाना तपस्या है, पर शुभयोग भी बड़ी तपस्या है। विवेकपूर्ण सत्पुरुषार्थ करना भी तपस्या है। व्यक्ति को मात्र भाग्य भरोसे नहीं बैठकर पुरुषार्थ में प्रवृत्त होना चाहिए। पुरुषार्थ को त्याग कर जो भाग्य भरोसे बैठा रहता है, वह दुनिया का अभागा व्यक्ति है। हम महावीर की शिक्षाओं को समझें और उन्हें अपने जीवन में उतारें तो महावीर जयंती मनाने की अधिक सार्थकता होगी।'

छहकोटि स्थानक में मिली साध्वियों के सद्भाव की आचार्यवर ने सराहना की। जुलूस में प्रदर्शित झांकियों को आचार्यवर ने उपयोगी बताया। पूज्यवर ने कहा--'कच्छ यात्रा के दौरान आज हम रापर आए हैं। यात्रा में मुझे जैन समाज की सद्भावना देखने को मिली। रापर जैन समाज के निवेदन पर मैंने रापर में महावीर जयंती मनाने का निर्णय लिया। सबमें मैत्री, अहिंसा व संयम की भावना विकसित होती रहे।'

आचार्यप्रवर ने इस अवसर पर घोषणा की--**'सन २०१४ की महावीर जयंती का कार्यक्रम पंजाब में स्थित मानसामंडी में करने का भाव है।**

आचार्यवर ने रापर के गुरुदेव तुलसी से 'तत्त्वज्ञ श्रावक' संबोधन प्राप्त श्री रायचन्दभाई मेहता, श्री खीमजीभाई मेहता व वरदीलाल मेहता का उल्लेख किया और उनकी वर्तमान पीढ़ी को धर्मध्यान में जागरूक रहने की प्रेरणा प्रदान की।

Postal Reg. No. DL (C)-01/1243/12-14 Fri.-Sat.
Date of Publication : 27-04-2013 L.No.-U (C) 200/2012-2014
Licence to Post without Pre-payment
Regd. No. 61758/95 Office of Posting N.D.P.S.O.

कार्यक्रम में अपनी जन्मस्थली रापर की ओर से मुनि अनंतकुमारजी ने अपने विचार रखे। महिला मंडल द्वारा गीत संगान के बाद स्थानीय विधायक श्री बाघजीभाई पटेल, नगरपालिकाध्यक्ष श्रीमती जसवंतीबेन मेहता, बागड़ बे चौबीसी जैन बीसा समाज के प्रमुख डॉ. रमेशचन्द दोशी, छहकोटि जैन संघ के प्रमुख श्री नवीन मोरबिया, तेरापंथी सभा के अध्यक्ष श्री रमणीकलाल खंडोर, स्वागताध्यक्ष श्री पंकजभाई मेहता, श्रीमती चेतनाबेन मोरबिया, आठकोटि जैन संघ के प्रमुख श्री जयंतीलाल दोशी ने पूज्यवर के स्वागत में अपने उद्‌गार व्यक्त किए। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया। कार्यक्रम में उल्लेखनीय उपस्थिति रही। लगभग सवा बजे तक कार्यक्रम चलने पर भी प्रायः शान्ति बनी रही।

२६ अप्रेल को परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर का रापर से वाव की ओर विहार हो गया है। विस्तृत रिपोर्ट पढ़ें आगामी विज्ञप्ति में।

आदर्श साहित्य संघ को भेंट

५१००/- श्रद्धानिष्ठ श्रावक श्री मोहनलालजी सेठिया एवं श्रद्धा की प्रतिमूर्ति श्रीमती सुन्दरदेवी सेठिया (मोमासर-दिल्ली) के प्रपौत्र चि. विधान (सुपुत्र विकास-नेहा, सुपौत्र कमल-कल्पना) के जन्मोत्सव व स्वर्ण-सोपान आरोहण के उपलक्ष्य में सुपुत्र व पुत्रवधू पुखराज-सरोज, सुखराज-प्रेम, सुपौत्र राजीव-मधु, कपिल-श्वेता, सुनील-सुरुचि सेठिया द्वारा प्रदत्त।

५१००/- श्री ताराचन्द-राजकुमारी बैद (राजलदेसर-दिल्ली) के दाम्पत्य जीवन की ५०वीं वर्षगांठ (स्वर्णजयंती) के उपलक्ष्य में उनके सुपुत्र व पुत्रवधू सुनीलकुमार-सरिता, अनिलकुमार-अनिता, सुपौत्र पुनीत, यश व सुपौत्री निधि, लिपाक्षी बैद द्वारा प्रदत्त।

२१००/- श्री चन्द्रप्रकाश एवं श्रीमती सन्तोष जैन के दाम्पत्य जीवन की ५०वीं वर्षगांठ (स्वर्णजयंती) के उपलक्ष्य में उनके सुपुत्र व पुत्रवधू कमल-सुनीता, अरविन्द-लता, सुपौत्र लक्ष्य, हिमांशु, मुदित व सुपौत्री कीर्ति, पारुल, हांसी (हरियाणा) द्वारा प्रदत्त।

२१००/- परम श्रद्धेय आचार्यश्री महाश्रमण की कच्छ यात्रा में चालीस दिवसीय मार्ग सेवा के उपलक्ष्य में श्रीमती मूलीबाई-माणकचन्द धाड़ेवा, जयाबेन-ताराचन्द छाजेड़, प्यारीदेवी-पारसमल गादिया व विमलाबाई-मांगीलाल छाजेड़, द्वारा-मामा-भानजा, बेंगलुरु द्वारा प्रदत्त।

२१००/- प्रपौत्र चि.मनन (सुपुत्र राहुल-कविता, सुपौत्र जसवंतराज-गुणवंतीबाई) के शुभजन्म के उपलक्ष्य में श्रद्धानिष्ठ श्रावक श्री पारसमलजी, श्रद्धा की प्रतिमूर्ति श्रीमती प्यारीबाई गादिया (रामसिंहकागुड़ा-बेंगलुरु द्वारा प्रदत्त।

पत्र व्यवहार के लिए हमारा पता—

केशवप्रसाद चतुर्वेदी, प्रबन्धक-आदर्श साहित्य संघ, द्वारा-आचार्य महाश्रमण प्रवास व्यवस्था समिति,
तेरापंथ भवन, पो. वाव-३८५ ५७५, जि. बनासकांठा (गुजरात)
मोबाइल नं. ०७६६८६५०४१० (गुजरात प्रवास में), ०६३५२४०४६४१
दिल्ली कार्यालय का फोन ०११-२३२३४६४१ Email : adarshsahityasangh@yahoo.com

●

आदर्श साहित्य संघ, २१०, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली-११०००२ के लिए बच्छराज कठौतिया ट्रस्टी द्वारा प्रकाशित तथा पवन प्रिंटर्स, नवीन शाहदरा, दिल्ली-११००३२ से मुद्रित। सम्पादक : **केशवप्रसाद चतुर्वेदी।**